

- 1 (संकर) तिहाई नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटेश बिजाई के समय पोर दें। तिहाई नाइट्रोजन पौधों के, घुटने की ऊँचाई तक पहुंचने पर तथा शेष तिहाई नाइट्रोजन भुट्टे बनते समय डालें।
- 1 (देसी) आधी नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटेश बिजाई के समय पोर करें। शेष नाइट्रोजन बिजाई के एक मास बाद पौधों के पास डालें।
- (बौनी किस्में) तिहाई नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटेश गारा करके डालें। बाकी नाइट्रोजन दो बराबर भागों में क्रमशः पनीरी रोपाई के 21 दिन तथा 42 दिन बाद प्रयोग करें।
- (स्थानीय) फास्फोरस गारा करके डालें, 1/2 नाइट्रोजन पनीरी रोपाई के 21 दिन व शेष 42 दिन बाद डालें।
- 1 (संकर) आधी नाइट्रोजन, फास्फोरस बिजाई के समय पोरें। शेष नाइट्रोजन दो बराबर भागों में बांटकर पौधे को छिड़ा करते समय व सिट्टे निकलते समय डालें।
- 1 (अमरीकन व देसी) फास्फोरस व पोटेश बिजाई के समय पोरें। अगर फास्फोरस बिजाई पर नहीं डाली गई हो तो बौकी पर पोरें। आधी नाइट्रोजन बौकी के समय (45-60 दिन) व शेष नाइट्रोजन फूल निकलते समय कतारों में दोनों ओर डालें। अगर गेहूँ के बाद कपास ले रहे हों तो बौकी के समय डाली जाने वाली नाइट्रोजन, बिजाई पर पोरें।
- 1 (चारा) दो तिहाई नाइट्रोजन बिजाई के समय व 1/3 बिजाई के एक महीने बाद डालें।

किसान भाई अपने ट्यूबवैल के पानी की जाँच समय-समय पर मृदा परीक्षण प्रयोगशाला में अवश्य कराते रहें तथा नए ट्यूबवैल के पानी जाँच ट्यूबवैल पक्का करने से पहले करवाएँ।

टिप : यह मिट्टी का नमूना जाँच हेतु किसान द्वारा स्वयं लिया गया है।

अधिक जानकारी हेतु लिखें या मिलें :

1. जिला विस्तार विशेषज्ञ (मृदा) कृषि ज्ञान/विज्ञान केन्द्र।
2. इंचार्ज मृदा परीक्षण प्रयोगशाला
3. वरिष्ठ विस्तार विशेषज्ञ (मृदा) एवं
4. प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, मृदा विज्ञान विभाग, चौ० च० सि० हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार-125 004.

क :
 ष्ट मृदा रसायनज्ञ,
 ष्ट विज्ञान विभाग, भूमि परीक्षण प्रयोगशाला,
 ० च० सि० हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
 हिसार, रोहतक, उचानी-करनाल, बावल)

भारत सरकार सेवार्थ



मिट्टी विश्लेषण रिपोर्ट

बुक-पोस्ट

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार-125 004

संख्या..... 71808 / 2 दिनांक.....

पता श्री/श्रीमती..... Director पुत्र/पुत्री/पत्नी/श्री..... N.R.F.M.T.&T.I.

गांव..... Sissa Road डाकखाना..... Hisar

ब्लाक..... जिला..... Hisar (Haryana)

मिट्टी के नमूनों की विश्लेषण रिपोर्ट

क्र. नं.	खेत नं.	किस्म जमीन	खारी अंग PH(1:2)	नमक मात्रा (1:2) (डेसी सादमन/मी.) (%)	जैविक कार्बन (%)	प्राप्यता (कि./है.) फास्फोरस	पोटेश	नाइट्रोजन	श्रेणी संख्या	जिप्सम (किं./एकड़)
Hisar 120	12	SL	8.2	0.97	0.45	22	600	26	S	T
121	3	11	8.1	1.12	0.37	27	650	4	S	T

आपके द्वारा भेजे गए मिट्टी के नमूने में नमक की मात्रा ज्यादा पाई गई है। मतः खेत में दौरी-दौरी ब्यारियां बना कर नहर या बरसात का पानी करें।

आपके द्वारा भेजे गए मिट्टी के नमूने में फास्फोरस व पोटेश अधिक मात्रा में हैं तथा जैविक कार्बन व नाइट्रोजन खेत नमूने में कम तथा 12 में नमक पाई गई है। अच्छा पैदावार के लिए 60 मिटरल गोबर की खाद प्रति एकड़ खेतों में डालें। रसायनिक खादों की खर्चा मात्रा पौधे तालक में बनाए अनुसार खेतों में डालें।

[Signature]
 29/8/16.

विश्लेषण रिपोर्ट के आधार पर खाद की सिफारिशें (किलोग्राम/एकड़)

फसल का नाम श्रेणी संख्या	नाइट्रोजन			फास्फोरस			पोटाश		
	क	ख	ग	अ	ब	स	प	फ	त
गेहूँ (बौनी किस्में)	60	50	40	24	16	8	24	12	-
गेहूँ (देसी) व जौ सिंचित	24	18	12	12	8	4	12	6	-
गेहूँ व जौ (बारानी)	12	8	4	6	4	-	-	-	-
चना, मसूर, मूंग, उड़द, लोबिया, अरहर	6	4	-	16	12	-	-	-	-
सरसों, तोरिया	24	18	12	8	6	4	-	-	-
राया	32	24	16	12	8	6	-	-	-
सरसों, राया (बारानी)	16	12	8	8	6	-	-	-	-
सूरजमुखी	24	18	12	16	12	-	-	-	-
बरसीम	10	8	-	28	21	14	-	-	-
गन्ना (बीजित)	60	50	40	20	10	-	20	10	-
गन्ना (पेड़ी)	90	75	60	-	-	-	-	-	-
आलू	50	40	30	20	15	10	40	30	20
मक्का (संकर)	60	50	40	24	16	8	24	16	-
मक्का (स्थानीय)	24	18	12	12	8	-	12	8	-
धान (बौनी किस्में)	60	50	40	24	16	-	24	16	-
धान (स्थानीय)	24	18	12	12	8	-	-	-	-
बाजरा (संकर)	48	36	24	24	16	-	-	-	-
बाजरा (बारानी)	16	12	8	8	6	-	-	-	-
कपास (अमरीकन)	36	27	18	12	8	-	12	-	-
कपास (देसी)	20	15	10	-	-	-	-	-	-
मूंगफली	6	4	-	20	15	10	15	10	-
ग्वार (चारा)	8	6	4	20	15	10	-	-	-
ज्वार (चारा)	30	25	20	8	-	-	-	-	-

नोट: 1. गोबर की खाद 4-6 टन प्रति एकड़ प्रयोग करने पर फास्फोरस व पोटाश की मात्रा आधी करें।

- अधिक उपज देने वाली किस्मों वाले फसल चक्र में 10 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति एकड़ गेहूँ में बिजाई के समय डालें, परंतु धान-गेहूँ फसल चक्र में यह धान में रोपाई पर डालें।
- जहां तक संभव हो है चा (जन्तर) हरी खाद के रूप में गेहूँ के बाद लगाएं तथा धान में एक तिहाई नाइट्रोजन की मात्रा कम डालें।
- दलहनी फसलें फसल-चक्र में सम्मिलित करें और जीवाणु खाद के टीके का प्रयोग करें।

विश्लेषण रिपोर्ट में श्रेणी के आधार

खारी अंग pH(1 : 2)	नमक मात्रा (1 : 2) (डेसी साइमन/मी.)	जैविक कार्बन (प्रतिशत)	किलोग्राम/हेक्टर	
			प्राप्य फास्फोरस	प्राप्य पोटाश
6.5 से कम अम्लीय	0.8 से कम, सभी फसलें उगा सकते हैं।	0.4 से कम, (क) कम	10 से कम (अ) कम	125 से कम, (प) कम
6.6 से 8.7 सामान्य	0.8 से अधिक और 1.6 से कम, दाल वाली फसलें न उगाएं।	0.4 से 0.75 (ख) मध्यम	10 से 20 (ब) मध्यम	125 से 300 (फ) मध्यम
8.7 से अधिक क्षारीय	1.6 से 2.5, नमक सहनशील फसलें जैसे-जौ, हैचा, धान, तम्बाकू, बरसीम, गन्ना, कपास, उगाएं। 2.5 से अधिक, फसलों को हानिकारक	0.75 से अधिक (ग) अधिक	20 से अधिक (स) अधिक	300 से अधिक (त) अधिक

खाद चार्ट में विभिन्न फसलों के लिए आवश्यक नाइट्रोजन, फास्फोरस पेंटा आक्साइड व पोटाशियम आक्साइड की मात्राएं (किलोग्राम प्रति एकड़) दी है। आप अपने पास मौजूद खाद को प्रयोग की जाने वाली मात्रा का पता लगाने के लिए खाद सामने दिए गए गुणांक से गुणा करें।

खाद	गुणांक	खाद	गुणांक
1. किसान खाद (25%) नाइट्रोजन	4	4. डाई अमोनियम फास्फेट (डी.ए.पी.) (46%) पी ₂ ओ ₅ व (18%) नाइट्रोजन	2.2
2. यूरिया (46% नाइट्रोजन)	2.2	5. म्यूरेट ऑफ पोटाश (60% के ₂ ओ)	1.7
3. सुपर फास्फेट (16% पी ₂ ओ ₅)	6.2		

डी.ए.पी. देने पर उसमें उपलब्ध नाइट्रोजन की मात्रा को ध्यान में रखें। अतः नाइट्रोजन की खाद में डी.ए.पी. की मात्रा आधार पर कमी कर लें। डी.ए.पी. की मात्रा को 5.5 से भाग देने पर शुद्ध नाइट्रोजन का पता चल जाएगा।

खादों के प्रयोग का समय तथा तरीका

गेहूँ (बौनी व देसी किस्में) एवं जौ	आधी नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा पोटाश बिजाई के समय पोर दें। शेष नाइट्रोजन पहली सिंचाई के र छिट्टा करें।
बारानी (गेहूँ, जौ, सरसों, राया, बाजरा)	संपूर्ण खाद बिजाई के समय पोर करें।
चना, मसूर, मूंग, उड़द, लोबिया, अरहर, बरसीम, ग्वार एवं मूंगफली	आधी नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश बिजाई से पहले डालें। शेष नाइट्रोजन पहली सिंचाई पर डालें।
सरसों, राया, तोरिया, सूरजमुखी	1/3 नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश बिजाई के समय पोरियों के नीचे पोरा करें।
गन्ना (बीजित)	1/3 नाइट्रोजन मई में और शेष जून के आखिर तक डालें।
गन्ना (पेड़ी)	तिहाई नाइट्रोजन पहली निराई-गुड़ाई के समय फरवरी में, तिहाई अप्रैल में, शेष तिहाई जून में डालें।
आलू	दोमट भूमियों में संपूर्ण खाद बिजाई पर डालें। हल्की भूमियों में दो-तिहाई नाइट्रोजन पूरी फास्फोरस पोटाश बिजाई पर लाइनों के दोनों तरफ, आलू से 4-5 सें.मी. की दूरी पर डालें। 20 टन प्रति ए गोबर की खाद डालने पर फास्फोरस व पोटाश की मात्रा आधी करें। मध्यम व देरी से पकने वाली कि में नाइट्रोजन की मात्रा 20 प्रतिशत बढ़ाएं।

पानी परीक्षण

हरियाणा में भूमिगत पानी जांच सुविधा एक मुफ्त सेवा है लेकिन इस विश्वविद्यालय की चारों प्रयोगशालाओं द्वारा किसानों से नाम मात्र ही जाँच शुल्क लिया जाता है। इसके अतिरिक्त हरियाणा कृषि विभाग की ओर से उपमंडलीय स्तर पर ऐसी 29 प्रयोगशालाएं (नारायणगढ़, अम्बाला, जगाधरी, थानेसर, पेहवा, कैथल, करनाल, पानीपत, नरवाना, जींद, गोहाना, सोनीपत, झज्जर, रोहतक, बहादुरगढ़, गुड़गावां, नूंह, फिरोजपुर-झिरका, बल्लभगढ़, पलवल, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, नारनौल, भिवानी, दादरी, हांसी, कुलां, फतेहाबाद एवं सिरसा) कार्यरत हैं।

पानी का नमूना लेते समय ध्यान योग्य सुझाव :

1. नलकूप (ट्यूबवैल) को कम से कम 3½ घंटे चलाने के बाद चलते हुए ट्यूबवैल से ही नमूना भरें। परंतु बोतल को सर्फ व सोडे से साफ न करें।
2. किसी भी दवाई वाली बोतल में पानी का नमूना न लें।
3. बोतल, जिसमें नमूना लेना हो, को पहले उसी पानी से 2-3 बार धो लें।
4. सुविधानुसार बोतल प्लास्टिक या शीशे की ही प्रयोग में लाएं तथा पानी की मात्रा लगभग 500-700 मि.ली. हो।
5. बोर में जिस-जिस सतह पर पानी पूरा मिले उसी सतह से पानी का नमूना अलग-अलग बोतल में भरें।
6. मीठा पानी भी जमीन तथा फसलों के लिए हानिकारक हो सकता है अतः प्रत्येक बोर की जांच करवाकर सिफारिश अनुसार प्रयोग करें।
7. बोतल के ऊपर अपना व पिता का नाम, पूरा पता, सतह की गहराई आदि लिखें।

अपने नलकूप (ट्यूबवैल) के पानी की जाँच वर्ष में दो बार, बिजाई से पहले (रबी व खरीफ) अवश्य करवाएं।

अच्छा रहेगा यदि किसान भाई पानी परीक्षण के साथ-साथ अपने खेत की मिट्टी की जाँच भी 2-3 वर्ष में एक बार अवश्य करवा लें। पुरानी सभी जांच रिपोर्ट, पानी की जांच करवाते समय साथ लाएं।

मिट्टी-जाँच के लिए नमूना लेते समय ध्यान देने योग्य बातें :

1. सड़क, बांध, खाले, खलिहान, खाद के ढेर व पेड़ इत्यादि से कुछ दूर, खेत में मिट्टी का नमूना लें।
2. नमूना सिंचाई, बरसात, खाद डालने तथा घास-फूस जलाने के तुरंत बाद न लें।
3. नमूना भरते समय ऊपर का घास-फूस, कंकड़-पत्थर आदि हटा दें।
4. गीली मिट्टी को छाया में सुखा कर थैली में भरें।
5. अपना व पिता का पूरा नाम, पता, खेत नंबर, नमूने की गहराई, फसल-चक्र, अगर कोई समस्या हो तो उसका विवरण व नमूनों का उद्देश्य भी लिखें।

अधिक जानकारी के लिए अपने नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र में जिला मृदा विशेषज्ञ या निकटतम मिट्टी-पानी परीक्षण प्रयोगशाला के मृदा विशेषज्ञ से संपर्क करें अथवा मिट्टी-पानी प्रयोगशाला विशेषज्ञ, चौ. च. सिं. ह. कृ. वि., हिसार से मिलें।

पानी विश्लेषण रिपोर्ट



(भारत सरकार सेवार्थ)

चौ. च. सिं. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

रसीद संख्या 71798/11

Despatch No. 2572

Date 10/8/16

श्री/श्रीमती DIRECTOR पुत्र/पत्नी श्री
गाँव Northern Regional Farm
मशीनरी & Testing in the
ब्लाक BIRSA Road, Hissar, Haryana

प्रयोगशाला नं.	मिट्टी रचना	विद्युत चालकता	खारी सोडा	मीठा सोडा	क्लोराईड सोडियम	चूना	चूना+ मैग्नी.	शेष सोडियम	एस. ए. आर.	सुझावित वर्ग	जिप्सम की आवश्यकता कि.ग्रा./एकड़/सिंचाई	
Lab. No.	Soil texture	ECx10 ⁶	CO ₃	HCO ₃	Cl ⁻	Na ⁺	Ca ⁺⁺	Ca ⁺⁺ + Mg ⁺⁺	RSC	SAR	Suggestive category	Gypsum required
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
AC-44	1510	8.0	6.0	1.2	3.0	5.0					S	160

नोट :-

सुझावित वर्ग और सावधानियां

- (i) आपके द्वारा भेजा गया पानी सब प्रकार की फसलों के लिए अच्छा है।
- (ii) आपके द्वारा भेजा गया पानी धान के अतिरिक्त सब फसलों के लिए उपयुक्त है।
- (iii) आपके द्वारा भेजा गया पानी धान व सब्जियों के अतिरिक्त सब फसलों के लिए उपयुक्त है।
- (स) आपके पानी में कैल्शियम व मैग्नीशियम की कमी है अतः प्रयोग करने से पहले जिप्सम की बताई गई कुल मात्रा (जो कि किसी भी फसल की पानी की कुल जरूरत पर निर्भर है) पलेवा से पहले खेत में बखेर कर मिट्टी की ऊपरी 10 सें.मी. सतह में मिलाएं। उदाहरणतया अगर फसल में कुल 4 पानी लगते हैं और आपके पानी की जिप्सम की आवश्यकता 160 कि.ग्रा. प्रति सिंचाई है तो 4 x 160 = 640 कि.ग्रा. या (640 कि.ग्रा.) जिप्सम प्रति एकड़ फसल बोने से पहले खेतों में डालें।
- (द) आपका पानी सिंचाई के योग्य नहीं है अतः नए गहरे बोर के बारे में या कैविटी न मिलने पर नए बोर के लिए भू जल कोष हरियाणा के दफ्तर से संपर्क करें।

नोट : यह पानी का नमूना जाँच हेतु किसान द्वारा स्वयं लिया गया है।

10/8/16
वरिष्ठ मृदा रसायनज्ञ

मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला, कृषि विज्ञान विभाग
चौ. च. सिं. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
(हिसार, रोहतक, उचाजी, करनाल, बौधिल-रेवाड़ी)
(कृ. प्र. उ.)

क्षारीय (तेलियां) पानी से सफल खेती के लिएकुछ सुझाव (ई. सी. 4000 मा. म्होज/सैं.मी. से कम, एस.ए.आर. 10 से अधिक, आर.एस.सी./शेष सोडियम : 2.5 मि.तु./ली. से अधिक)

क्र.सं.	पानी की ई.सी. (ई.सी.×10 ⁶ मा. म्होज/सैं.मी.)	खेत की मिट्टी	औसत वार्षिक वर्षा (मि. मी.)	फसलें तथा प्रबंधन क्रियाएं
1.	1000 से कम	सभी भूमियों के लिए	250 से ज्यादा 400 से कम	1. अगर नहर का पानी उपलब्ध नहीं है तो रबी में केवल गेहूँ, सरसों या जौ लें। 2. यदि आधी सिंचाइयों के लिए नहर का पानी उपलब्ध है तो खरीफ में कपास, बाजरा तथा ग्वार भी ले सकते हैं। 3. 400 से अधिक (हरियाणा के बाकी क्षेत्र) 1. रबी : गेहूँ, सरसों, जौ, बरसीम। खरीफ : ग्वार, बाजरा, कपास ज्वार। 2. यदि आधी सिंचाइयों के लिए नहर का पानी उपलब्ध है तो खरीफ में धान व गन्ना भी ले सकते हैं।
2.	1000 से 2000	सभी भूमियों के लिए	250 से ज्यादा 400 से कम	रबी : गेहूँ, सरसों, जौ। खरीफ : खेत खाली रखें। रबी : गेहूँ, सरसों, जौ, बरसीम। खरीफ : ग्वार, बाजरा, ज्वार, कपास। नहर : अगर नहर का पानी कम से कम 3/4 उपलब्ध है तो धान व गन्ना भी ले सकते हैं।
3.	2000 से 4000	रेतीली से दोमट तक (चिकनी छोड़कर)	250 से 400	रबी : गेहूँ, सरसों, जौ। खरीफ : खेत खाली रखें। रबी : गेहूँ, सरसों, जौ, बरसीम। खरीफ : ग्वार, बाजरा, ज्वार, कपास। नहर : धान व गन्ना को छोड़कर ऊपर बताई गई अन्य फसलें सभी भूमियों पर।

नोट : ऊपर बताए गए सुझावों के अलावा भूमि की उपजाऊ शक्ति बनाए रखने के लिए सामान्य हालातों में सिफारिश किए गए उर्वरकों के अलावा जिप्सम तथा गोबर की खाद खेतों में डालना न भूलें।

- जाँच के आधार पर भूमि में जिप्सम डालकर पानी की सारी आर. एस. सी. को उदासीन करें। एक मि.तु. प्रति लीटर आर. एस. सी. के पीछे लगभग 30 कि.ग्रा. जिप्सम प्रति एकड़ प्रति सिंचाई (7.5 सेंटीमीटर) काफी है।
- रबी की फसल काटने के बाद बरसात शुरू होने से पहले सिफारिश की गई जिप्सम की मात्रा को एकसार बखेर कर भूमि में-10 सैं.मी. की गहराई एक जुताई करके मिला दें। जिप्सम को दो या तीन बार में तथा खड़े पानी में भी डाला जा सकता है।
- 100 से 150 क्विंटल प्रति एकड़ प्रति वर्ष गोबर की खाद प्रयोग करने पर जिप्सम की मात्रा 25 से 50 प्रतिशत कम की जा सकती है। परंतु चिकनी भूमियों में अकेले गोबर की खाद प्रयोग से कपास, बाजरा और ग्वार जैसी फसलों में पानी ज्यादा देर खड़ा रहने के कारण लाभ की बजाय हानि हो जाती है।

- यदि खेत पहले ही कल्लर हो चुका है तो उसकी मिट्टी की जाँच के आधार पर जिप्सम डालें और बाद में तेलिया पानी की आवश्यकतानुसार जिप्सम हर साल डालें।
- तेलिया पानी से सिंचित फसलों को सामान्य हालात से 25 प्रतिशत अधिक नाइट्रोजन तथा जस्ता खाद की जरूरत पड़ती है।
- कम बरसात वाले क्षेत्रों में वर्षा सामान्य से कम होने की स्थिति में रबी में गेहूँ की बजाय सरसों या जौ लें और अगली खरीफ में इस पानी का प्रयोग न करें।
- बिना आर. एस. सी. वाले पानी, जिनकी एस. ए. आर. 15 से ज्यादा है, प्रयोग करने पर 2.5 से 5 क्विंटल जिप्सम प्रति एकड़ प्रति वर्ष डालने से कपास, बाजरा तथा ग्वार जैसी फसलों को फायदा होता है।
- याद रहे कि आपके पानी में 1.0 मि. तुल्यांक प्रति लीटर नाइट्रेट तथा पोटाशियम होने से एक ही सिंचाई (7.5 सैं.मी.) से 4.0 किलोग्राम नाइट्रोजन तथा 11.2 कि.ग्रा. पोटाशियम का लाभ होता है।

औसत वार्षिक वर्षा

- (क) 300 मि.मी. से कम : सिवानी एवं सिरसा।
- (ख) 300 से 400 मि.मी. : साल्हावास, बेरी, टोहाना, हाँसी, फतेहाबाद, हिसार, लोहार, भिवानी, खोल एवं फरुखनगर।
- (ग) 400 से 500 मि.मी. : कैथल, गुहला, राजौंद, जाटूसाना, पुहाना, तावडू एवं बावल।
- (घ) 500 से 600 मि.मी. : जींद, सोनीपत, गोहाना, झज्जर, रोहतक, पटौदी, महेन्द्रगढ़, नारनौल, दादरी, रेवाड़ी, हथीन, हसनपुर, सोहना एवं नूंह।
- (ङ) 600 से 700 मि.मी. : थानेसर, पानीपत, बल्लभगढ़, पलवल एवं फिरोजपुर-झिरका।
- (च) 700 मि.मी. से अधिक : कालका, पंचकूला, अम्बाला, नारायणगढ़, जगाधरी, करनाल एवं गुड़गांव।
- (अ) जिन भूमियों में बारीक चिकनी मिट्टी की मात्रा 30 प्रतिशत से अधिक है, उनमें उन्हीं पानी का प्रयोग करें जिनकी आर.एस.सी. 2.5-3.5 मि.तु. प्रति लीटर व एस. ए. आर. 10 तक।
- (ब) जिन भूमियों में हल्की चिकनी मिट्टी की मात्रा 20 से 30 प्रतिशत है, उनमें उन्हीं पानी का प्रयोग करें जिनकी आर.एस.सी. 3.5-5.0 मि. तु. प्रति लीटर व एस. ए. आर. 10 तक हो।
- (स) जिन भूमियों में हल्की मोटी चिकनी मिट्टी की मात्रा 10 से 20 प्रतिशत है, उनमें उन्हीं पानी का प्रयोग करें जिनकी आर.एस.सी. 5.0 से 7.5 मि. तु. प्रति लीटर व एस. ए. आर. 15 तक हो।
- (द) जिन भूमियों में मोटी चिकनी मिट्टी की मात्रा 10 प्रतिशत से कम है, उनमें उन्हीं पानी का प्रयोग करें जिनकी आर.एस.सी. 7.5-10 मि. तु. प्रति लीटर व एस. ए. आर. 20 तक हो।